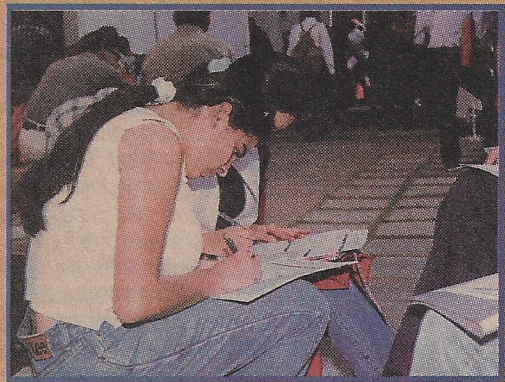
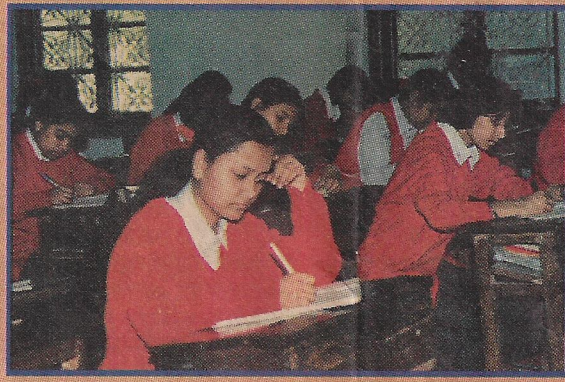


बयि दिशाएं

हिंदुस्तान



2
घर बैठे पढ़ाई
राजनीति विज्ञान में
एम. फिल.



3
अवसर
नौकरी, रिक्तियों के
बारे में जानकारी



नौकरी तलाशने के साथ-साथ कोई कोर्स भी करें

6 दिसम्बर, 2000

दर्पण

एजुकेशन काउंसिलिंग

'ब्रिटिश में शिक्षा' पर ब्रिटिश काउंसिल द्वारा छात्रों को सूचनाएं उपलब्ध करवाई जाएंगी।
तिथि : 6, 8, 13, 15, 20, 22, 27 एवं 29 दिसम्बर
समय : 3.30 अपराह्न
स्थान : द ब्रिटिश काउंसिल
कस्तूरबा गांधी मार्ग
नई दिल्ली-110001



क्रिसमस बुक फेस्टीवल

'हेमिलन आक्टोवन बुक फेस्टीवल' ब्रिटिश काउंसिल के क्वींस गैलरी में आयोजित होगा।
तिथि : 4-9 दिसम्बर
समय : 11 (पूर्वाह्न) से 7 बजे सायं तक
स्थान : द ब्रिटिश काउंसिल लाइब्रेरी
कस्तूरबा गांधी मार्ग
नई दिल्ली-110001

इन्फॉर्मेशन सेशन

'यूएसएफआई' द्वारा अमरीका 'स्प्रिंग सेशन' में पढ़ने के लिए जाने वाला छात्रों हेतु 'वीजा काउंसिलिंग' का आयोजन किया जाएगा।
यूएसएफआई के मेम्बरों के लिए यह सेशन निःशुल्क होगा लेकिन अन्य लोगों को 50 रुपये फीस के रूप में भरे पड़ेंगे।
तिथि : 7 दिसम्बर
समय : 12 पूर्वाह्न अपराह्न
स्थान : फुलब्राइट हाउस, 12, हेली रोड, नई दिल्ली-110001

आई.टी. पर डिस्क्शन

इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी पर एक डिस्क्शन। क्या यह वास्तविक औद्योगिक क्रांति है? स्पीकर होंगे द रोबोटिक्स इंस्टीट्यूट, पीयूएसबी के वीएस अरुणालाल
स्थान : इंडिया इंटरनैशनल सेंटर, लोदी रोड, नई दिल्ली-110001
तिथि : 8 दिसम्बर
समय : 6.30 बजे सायं

'बॉडकास्टिंग इन द सेटेलाइट एज' विषय पर डिस्क्शन

तिथि : 8 एवं 9 दिसम्बर
स्थान : द ब्रिटिश काउंसिल
कस्तूरबा गांधी मार्ग
नई दिल्ली-110001

सेमिनार

नेशनल इयुमन राइट्स कमीशन द्वारा सेमिनार का आयोजन किया जाएगा जिसमें मेगसेसे अवार्ड विजेता डा. अरुणा राय भी वक्ता के तौर पर उपस्थित होंगी।
तिथि : 10 दिसम्बर
समय : 10 बजे प्रातः
स्थान : इंडिया हेवीवेस्ट सेंटर, लोदी रोड, नई दिल्ली-110001

कॉमेडी

रोहनीत फोर



...सोचता हूँ, सौंदर्य प्रतियोगिताओं के विशेष प्रशिक्षण के लिए नए विश्वविद्यालय खोलने का यही उपयुक्त समय है...

कामर्शियल आर्ट

बेहतर व कलात्मक भविष्य

दिनेश तिवारी

व्यावसायिक कला (कामर्शियल आर्ट) अथवा अनुपयुक्त कला कोई नया क्षेत्र नया नहीं है। यह भी उतनी ही पुरानी है जितनी ललित कला किन्तु बढ़ते व्यावसायीकरण, उदारीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति ने कामर्शियल आर्ट को महत्ता को बढ़ावा दिया है। आज कामर्शियल आर्ट में स्नातक, स्नातकोत्तर या डिप्लोमा प्राप्त युवक-युवतियों के लिए डायरेक्टर, क्रिएटिव आर्टिस्ट, ग्राफिक डिजाइनर आदि के रूप में समाचार पत्रों के विशिष्ट अंको, रंगबिरंगी पत्रिकाओं से लेकर विज्ञापन एजेंसियों तक में रोजगार के तमाम अवसर खुल गए हैं। 1982 में भारतीय दूरदर्शन के व्यावसायिक होने तथा 1990 में भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आने के बाद कामर्शियल आर्टिस्टों की मांग बड़ी तेजी से बढ़ी है।

कामर्शियल आर्ट के क्षेत्र में कार्य करने की संभावनाएं भी बढ़ी हैं जिसका कारण है - फोटोग्राफी व कम्प्यूटर क्षेत्र में नई-नई तकनीकों का आना। हाँ, ललितकला व वाणिज्यिक कला में मात्र अंतर यह है कि वाणिज्यिक कला में कलाकार को अपनी सृजनशीलता स्वयं अपने या प्रशंसकों के लिए नहीं बल्कि अपने ग्राहक की संतुष्टि, उपभोक्ता की रुचि व बाजार की विज्ञापन संबंधी रणनीति को ध्यान में रख कर करनी होती है।

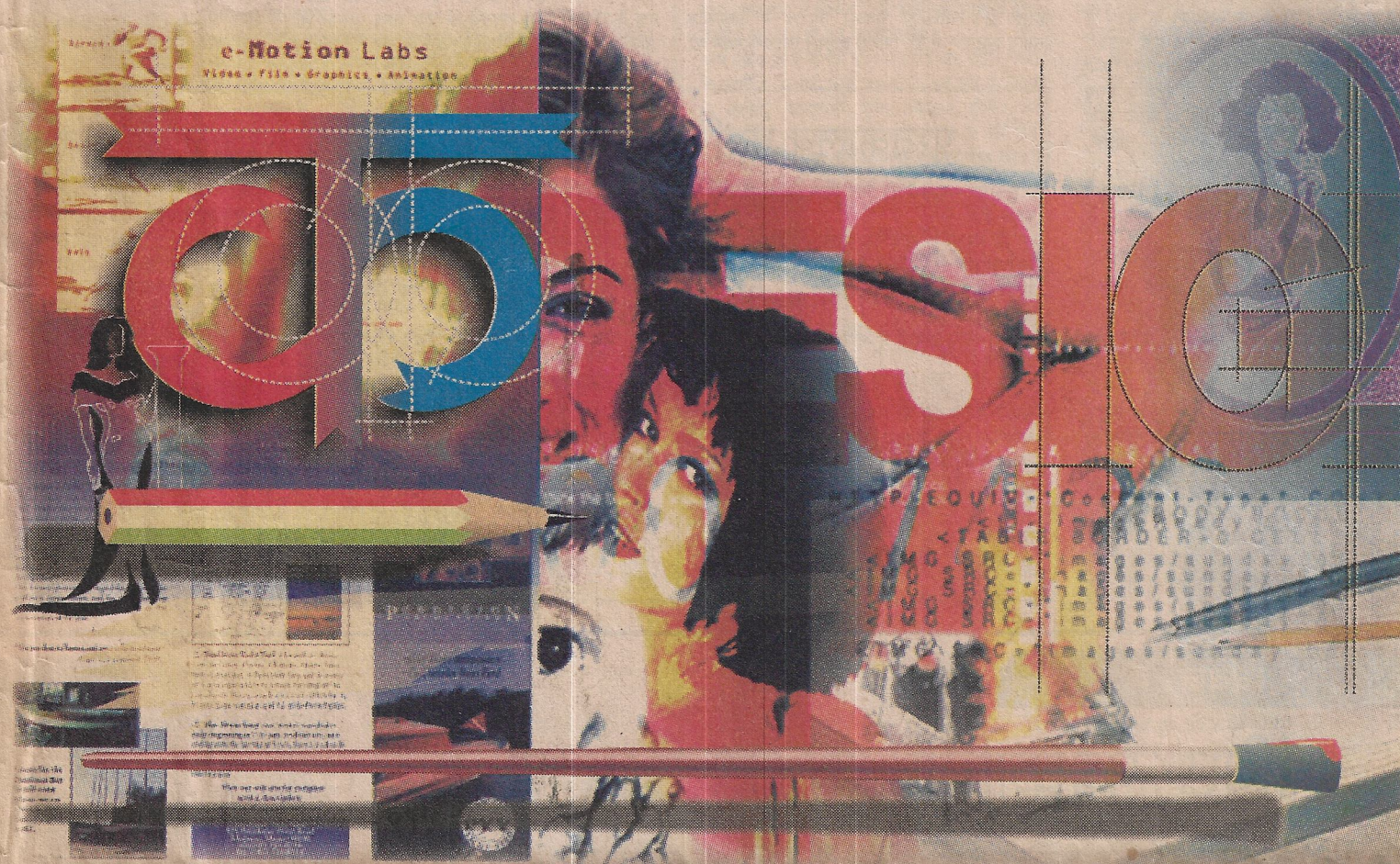
विज्ञापन एजेंसियों में विज्ञापन कार्य कामर्शियल आर्टिस्टों द्वारा ही किया जाता है। विज्ञापन कार्य सामूहिक रूप से किया जाता है, जो आवश्यकताओं, पेटेंट अप मैन, अक्षर लेखन करने वालों तथा चित्र बनाने वालों आदि के द्वारा होता है। इन व्यक्तिगतों के कार्यों का निरीक्षण और मार्गदर्शन प्रायः एक कला निदेशक द्वारा किया जाता है। कला निदेशक न केवल मार्गदर्शन, पर्यवेक्षण और विभिन्न विशिष्ट योग्यता के कलाकारों के कार्य का समन्वय करता है बल्कि नए-नए विचारों की परिकल्पना करता है तथा फोटोग्राफ, चित्रों आदि का संवाद भी करता है। विज्ञापन में व्यक्त किए जाने वाले विचार के संबंध में ग्राहक से चर्चा करने के बाद वह माध्यम और आकार (प्रदर्शन

विज्ञापन, सिनेमा स्टाइड, विज्ञापन पट्टर, पोस्टर आदि) का चयन करता है। फिर प्रयोग में लाई जाने वाली सामग्री और रंगों के विषय में निर्णय लेता है और आरंभिक आलेखन व डिजाइनों की तैयारी करता है। ग्राहक का अनुमोदन मिल जाने के बाद वह अंतिम अविन्यास और कार्यों को पूरा करता है।

वरिष्ठ व अनुभवी कामर्शियल आर्टिस्ट टेलीविजन और सिनेमा, व्यंग्य चित्रों, औद्योगिक फिल्मों, औद्योगिक डिजाइनों, फैशन चित्रों, कपड़े के डिजाइन, बर्बाद पत्रों के डिजाइनों, पैकिंग लेबलों आदि का ही काम करते हैं। किंतु अधिकांश आर्टिस्ट प्रकाशन (समाचार-पत्र पत्रिकाएं, पुस्तक के चित्रण व डिजाइनिंग, पोस्टर लेबलों, गैलेरी डिब्बों) ब्रोशर आदि का लाभ करते हैं। हालांकि कला का युग प्रकृति प्रदत्त होता है लेकिन अगर किसी अच्छे संस्थान से इस क्षेत्र का बारीकी से प्रशिक्षण प्राप्त किया जाए तो सफलता प्राप्त करने में अधिक देर

एवं स्थान निर्धारण व्यवस्था की सामंजस्य रूप योजना बनाने वाला।
डुप्लेक्स मैन : साधारण चार्टों, डायग्रामों, नक्शों एवं उचित अक्षर लेखन का काम खुले हाथों या स्टेंसिल या मशीन से करना।
वह लाइन ड्राइंग या स्केल ड्राइंग का भी काम कर सकता है।
पेन्ट अप मैन : काई बोर्ड पर अक्षर लेखन, चित्रों इलेस्ट्रेशन एवं मूल कला कार्य (आर्ट वर्क) को काट-छांट करने, सजाने व चिपकाने वाला।
विज्ञापन कलाकार : प्रदर्शन विज्ञापनों, नुमाइशों और दूसरे प्रदर्शनों के लिए इलेस्ट्रेशन, अक्षर लेखन, ले आउट आदि बनाने वाला।
सूचना पट्ट लेखक : साइन बोर्ड, नेम प्लेट एवं होर्डिंग्स का काम करने वाला।
कामर्शियल आर्टिस्ट के लिए बढ़ते उदारीकरण व व्यावसायीकरण ने रोजगार के तमाम क्षेत्र खोल दिए हैं। विज्ञापन एजेंसियों, दूरदर्शन एवं फिल्म स्टूडियो, मुद्रण व प्रकाशन संस्थानों, आर्ट स्टूडियो, सरकारी व निजी क्षेत्र के व्यापारिक व

नहीं लगेंगी। कामर्शियल आर्टिस्ट बनने के लिए इनमें से किसी में भी विशेषज्ञता प्राप्त कर सकता है।
इलेस्ट्रेटर : विज्ञापनों, पुस्तकों, पत्रिकाओं, सूची पत्रों, फैशन को चीजों आदि के लिए स्केच (रेखाचित्र) और इलेस्ट्रेशन तैयार करना।
ले आउट मैन : विचारों एवं कल्पनाओं को मूर्त रूप देने के लिए ड्राइंग, अक्षर लेखन, चित्रों, शीर्षकों (कैप्शन) आदि के क्रम



ग्राफिक : कोशल श्रीवास्तव

विभिन्न संस्थान

1. दिल्ली कला महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय), तिलक मार्ग, नई दिल्ली-110001
2. कला शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
3. सर जे. जे. स्कूल आफ आर्ट, डा. डी. एन. रोड, मुम्बई-400001
4. जॉर्मिया मिल्लिया इस्लामिया, जॉर्मिया नगर, नई दिल्ली-110025
5. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
6. हाउस होल्ड कला एवं होम साइंस संस्थान, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, अगरा
7. राजकीय शिल्प एवं कला महाविद्यालय, कलकत्ता
8. राजकीय शिल्प एवं कला महाविद्यालय, चंडीगढ़
9. बह रामपुर विश्वविद्यालय, भोज विहार, बहरामपुर-760007
10. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र-132119

प्रवीण

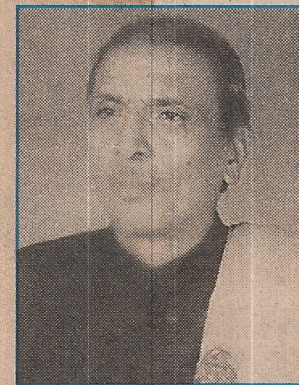
वैसे तो मनुष्य स्वभाव से ही महत्वाकांक्षी और प्रतिभाशील होता है लेकिन परिवार की आर्थिक स्थिति के बदलाव होने की वजह से न सिर्फ व्यक्ति का मनोबल टूटता जाता है बल्कि आत्मविश्वास की कमी की वजह से व्यक्ति दिशाहीन भी हो जाता है पर यदि दृढ़विश्वास और कुछ कर गुजरने की लगन हो तो फिर हर मुश्किल आसान हो जाता है। यह कहना है साहित्य अकादमी के मैथिली भाषा के प्रतिनिधि श्री राम देव झा का।

अत्यंत साधारण आर्थिक पृष्ठ वाले परिवार में जन्म लेकर खुद को इस मुकाम तक पहुंचाने उनके लिए सहज नहीं था। वह भी तब जब जन्म लेते ही विपरीत हालात बनने शुरू हो गए थे लेकिन अपने दृढ़ विश्वास और कर्मठता के साथ-साथ कुछ कर गुजरने की उनकी तमन्ना ने न सिर्फ उन्हें कामयाबी और शोहरत प्रदान की है बल्कि उन्हें साहित्य समाज के लिए प्रेरणा श्रोत भी बना दिया है। अपने अतीत के पन्नों का स्मरण करते हुए अत्यंत शायुक्त होकर रामदेव झा कहते हैं कि जब मेरा जन्म हुआ था उसके थोड़े ही दिनों के अंतराल में मेरे चाचा जी स्वर्ग सिंधार गए। इसके लिए समाज के लोग मुझे और मेरी माँ को कोसने लगे। फलस्वरूप बारह साल की उम्र तक अपने ननिहाल सहोरा (आनन्दपुर) में ही रहा और 1948 ई. में यहाँ से मिडिल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इन्हीं दिनों पिताजी हृदयशूल की बीमारी के शख्त चपेट में आ गए, जिसके वे खुद को असह्य महसूस करने लगा और पढ़ाई अपनी छोड़ कर एक प्रिंटिंग प्रेस में कम्पाजिक का काम सीखने लगा।

एक साल तक काम सीखने के बाद प्रेस की तरफ से अनुग्रह राशि के रूप में पांच रुपये मिलने लगे। जिसे अपनी जरूरतों को पूरा किया करता था। फिर उन्हीं दिनों इस प्रेस में एक आवश्यक काम को छोड़ा हो रही थी जिसका कि लाखों में आर्डर था परन्तु वह गलत रूप में छप रही थी। इस पर मेरी नजर गई और मैंने इसकी जानकारी तुरन्त प्रेस मैनेजर को दे दी। नतीजा हुआ कि इस दिन के बाद से मैं न सिर्फ प्रेस के मालिक का कृपा पात्र बन गया बल्कि प्रेस के मैनेजर अलख प्रसाद भी मुझे अपने बेटे की तरह मानने लगे।

अब तो आर्थिक तंगी के कारण छोड़ी पढ़ाई पुनः पुराने तेवर के साथ शुरू हो गयी। अपने वर्ग में सर्वश्रेष्ठ स्थान पाने में मैं सफल रहा। मेरी इस सफलता से प्रभावित होकर विद्यालय के तत्कालीन प्रधानाध्यापक क्षिप्र कुंवर ने विद्यालय शिक्षण शुल्क में पूर्ण रियायत तो प्रदान की ही साथ-साथ प्रेस के मैनेजर ने भी मेरी प्रतिभा से प्रसन्न होकर मुस्कान स्वरूप कापी, कलम और दवात दी। उनमें से एक कापी आज भी यादगार के रूप में उनके पास सुरक्षित है। उनका कहना है कि एच. एल. एकेडमी के चार साल के अध्ययन काल में मात्र एक दिन अनुपस्थित रहे थे वह भी हड़ताल के कारण कक्षाएं खाली थीं। इसके लिए बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री डा. श्री कृष्ण सिंह के हाथों ननएकसे पुरस्कार के रूप में चांदी का मेडल और लालवेन दी। अब तो शिक्षण शुल्क से मुक्त हो ही चुके थे फिर प्रेस में पाठ टाइम काम करने से किताब, कापी एवं कलम की स्याही आदि का

विपरीत परिस्थितियों ने उन्हें और मजबूत बनाया



खर्च आसानी से निकल जाता करता था। इस बीच परिवार का भरण-पोषण खेती से आये अनाज और माँ के धैर्य एवं साहस की बदौलत चलता रहा।

मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इंटरमीडिएट की पढ़ाई हेतु सी. एम. कालेज, दरभंगा (बिहार) में विज्ञान पाठ्यक्रम के लिए चयन भी हो गया लेकिन विज्ञान विषयों के साथ पढ़ाई करने में खर्च की अधिकता को देखते हुए कला विषयों के साथ ही आगे की पढ़ाई जारी रखी। इस बीच मैट्रिक एवं इंटरमीडिएट के प्राप्तांकों के आधार पर छात्रवृत्ति भी मिली। फिर डी. पी. आई. से छात्रवृत्ति के रूप में मिले एक सौ अठ्ठात्तर रुपये में एक साइकिल खरीदी क्योंकि इसके अभाव में गांव से 14 किलोमीटर की कालेज आने जाने की दूरी पैदल ही तय करनी पड़ती थी। फिर बी. ए. की परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने के बाद एम. ए. (मैथिली) की पढ़ाई हेतु पटना विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। इसी समय मिथिला दर्शन नामक मैथिली पत्रिका और हिंदी बाल पत्रिका चुन-मुन सहित विभिन्न समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं के सम्पर्क में आए और यही वह समय रहा जब इन्होंने न सिर्फ साहित्यिक रचनाएं की बल्कि प्रकाशित भी हुईं। एम. ए. और बी. ए. की परीक्षाओं में सफल प्रदर्शन के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त करने के साथ-साथ कापी समय बाद तक एच. ए. के रेकार्ड ब्रेकर के रूप में भी जाने जाते रहे।

साहित्य लेखन के प्रेरणा श्रोत के रूप में पं. चंद्रनाथ मिश्र अमर को मानने वाले रामदेव बाबू का कहना है कि पटना में एम. ए. की पढ़ाई की अवधि में उनकी साहित्यिक गतिविधि चरमोत्कर्ष पर थी और इसी समय लोक साहित्य पर आधारित लेख एवं कविताओं का सृजन करने लगा जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे। 1958 में श्री झा आकाशवाणी पटना से भी जुड़ गए जहाँ से अनुबंध

आधारित उनकी वार्ताएं प्रसारित होने लगीं और इन्हीं दिनों हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिका में लेखन के साथ-साथ प्रूफ रीडिंग का काम भी मिल गया जिससे आर्थिक तंगी बहुत हद तक कम हो गई। एम. ए. करने के बाद बेकारी का दर्द तो जाता ही रहा क्योंकि 24 नवम्बर, 1961 ई. को दुमका कालेज में उनकी नियुक्ति लेक्चरर के रूप में हो गयी।

अत्यंत मृदुभाषी और नरम दिल रामदेव बाबू की लेक्चरर के रूप में नियुक्ति के बाद तो मानों उनकी साहित्य साधना में दिन व दिन निखार हो आता गया। 1965 ई. में उनकी पहली पुस्तक एक खोरा तीन फांक मैथिली में प्रकाशित हुई जिसे पाठकों ने इतना पसंद किया कि तत्कालीन साहित्यिक पत्रिका धर्मपुर ने इसे हिंदी में अनुवादित कर 1966 ई. में प्रकाशित किया। गुग के हिसाब से अपने को फुर्तीला नहीं मानने वाले झा साहब को उनकी मैथिली कृति पसीझैत पाथर के लिए ए. ए. 1987 ई. के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया बल्कि कालांतर में राजेंद्र सिंह वेदी की हिन्दी रचना एक चादर मैली सी से मैथिली में सकाई नाम से अनुवादित इनकी कृति को वर्ष 1994 के अनुवाद पुरस्कार के लिए चुना गया। वर्तमान समय में रामदेव झा साहित्य अकादमी के मैथिली भाषा के प्रतिनिधि हैं र भाषा साहित्य के क्षेत्र में पुराने साहित्यकारों की कृतियों की सुरक्षा प्रदान किए जाने को कृतसंकल्पित रखते हैं।

साधारण किसान परिवार में जन्मे इस साहित्यकार की जीवन लीला आज सचमुच प्रेरणा का पर्याय बनकर रह गया है।